मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

टिड्डी अटैक भारत में

[1]सुनिता चौधरी, [2]राजेश कुमारी [3]संजीव कुमार कश्यप और [4]मालचंद जाट
[1,3]डिपार्टमेंट ऑफ एग्रोनोमी आईएएस बी एच यू वाराणसी, इंडिया 221005,[2]डिपार्टमेंट ऑफ प्लांट प्रोटेक्शन अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़, इंडिया–202002, [4]डिपार्टमेंट ऑफ एग्रोनोमी एम पी यु ए टी, उदयपुर राजस्थान–313001
Email: kumarirajesh001@gmail.com

टिड्डी अटैक

देश में 26 साल बाद टिड्डी दलों के सबसे भयानक हमले से करीब 90 हजार हेक्टेयर फसलें हरियाली उजड़ गई हैं। राजस्थान के 20 जिले इसकी चपेट में है। ऐसे में टिड्डी दलों की चपेट में आने वाली फसलों और हरियाली का आंकड़ा और बढ़ना तय है। राजस्थान के अलावा मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में टिड्डी दलों के हमले हो रहे हैं।

दुनिया की सबसे खतरनाक कीट होती हैं टिड्डियां : दुनियाभर में टिड्डियों की 10 हजार से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं, लेकिन भारत में केवल चार प्रजाति ही मिलती हैं। इसमें रेगिस्तानी टिड्डा, प्रवाजक टिड्डा, बंबई टिड्डा और पेड़ वाला टिड्डा शामिल हैं। इनमें रेगिस्तानी टिड्डों को सबसे ज्यादा खतरनाक माना जाता है।

कैसे पनपती हैं टिड्डियां?

ग्लोबल वॉर्मिंग के चलते मौसम में आए बदलाव को कारण माना जा रहा है। कि टिड्डी दलों की आबादी और हमले बढ़ रहे हैं। एक मादा टिड्डी अपने जीवन में कम से कम तीन बार अंडे देती है और एक बार में 95 से 158 अंडे तक दे सकती है। एक वर्ग मीटर में टिड्डियों के करीब 1000 अंडे हो सकते हैं। एक टिड्डी का जीवन सामान्यतया तीन से पांच महीने का होता है। दूसरी तरफ, ये नमी वाले इलाकों में पनपते हैं

टिड्डी दलों की तादाद और हमले बढ़ने का कारण बेमौसमी बारिश रही है। लाल सागर से अरबी प्रायद्वीप की बात हो या पाकिस्तान और भारत की, पिछले एक साल के दौरान लगभग हर महीने बारिश हुई। बेमौसम बारिश से नमी पाकर ये कीट भयानक रूप से बढ़े। विशेषज्ञों की मानें तो पहले प्रजजन काल में टिड्डियां 20 गुना बढ़ती हैं। दूसरे में 400 और तीसरे में 1600 गुना तक बढ़ जाती हैं।

टिड्डियों को भगाने के उपाय :

टिड्डियों को भगाने के परंपरागत उपायों में थाली बजाना, खेतों में धुंआ करना शामिल हैं। टिड्डियों का दल आवाज के कंपन को महसूस करता है। इस कारण आजकल इन्हें भगाने के लिए डीजे का भी प्रयोग किया जाने लगा है। यह आवाज को दूर से भांपकर अपना रास्ता बदल लेते हैं अथवा खेतों से उड़कर दूर चले जाते हैं। इसके अतिरिक्त, फसलों को टिड्डी दल के हमले से बचाने के लिए हेस्टाबीटामिल, क्लोरफाइलीफास और बेंजीएक्सटाक्लोराइड का खेतों में छिड़काव करना चाहिए। साथ ही ड्रोन से रसायन का छिड़काव किया जा रहा है। वहीं सरकारी स्तर पर भी इस तरह के प्रयास किए जाते हैं। हालांकि इतने बड़े पैमाने पर ऐसे उपाय करना काफी मुश्किल काम है। वहीं खाली पड़े खेतों में टिड्डी दल अंडे देता है। जिन्हें नष्ट करने के लिए खेतों में गहरी खुदाई की जानी चाहिए और फिर इनमें पानी भर देना चाहिए।

हमला हो जाने की दशा में टिड्डियों पर काबू पाना मुश्किल होता है। क्योंकि इसके लिए कीटनाशक का हवाई छिड़काव या विशालकाय स्प्रेयर से स्प्रे किया जाना होता है। भारत में यह सुविधा अब भी बहुत दुर्लभ है। टिड्डियों के हमले को रोकने का उपाय सावधानी है। यानी टिड्डियों के अंडों को पनपने से पहले नष्ट किया जाना चाहिए। इसके अलावा फसलों को ढांकना, टिड्डियों को खाने वाले पक्षियों को पालना, लहसुन के पानी का छिड़काव जैसे प्राकृतिक उपाय भी बताए जाते हैं।

रासायनिक उपायों में कारबैरिल को टिड्डियों के लिए सबसे असरदार माना जाता है। लेकिन इसके छिड़काव से फसलों के लिए उपयोग कीट भी नष्ट होते हैं। साथ ही, कैनोला तेल को कीटनाशक में मिलाकर स्प्रे का तरीका भी कुछ जगह अपनाया जाता है। एक दिन में डेढ़ सौ किलोमीटर तक उड़ने वाले टिड्डी दलों को अगर रोका न जाए तो ये देश के लिए खाद्य सुरक्षा का खतरा पैदा कर सकते हैं। अन्तः इनका रोकथाम बहुत आवश्यक है।